प्रश्नकोश

1. भारत में उपनिवेशी शासनकाल में 'होम चार्जेज' भारत से संपत्ति दोहन का महत्वपूर्ण अंग थे। निम्नलिखित में से कौन-सी निधि/निधियां 'होम चार्जेज' की संघटक थी/थीं?

   1. लंदन में इंडिया ऑफिस के भरण-पोषण के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।
   2. भारत में कार्यरत अंग्रेज कर्मचारियों के वेतन तथा पेंशन देने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।
   3. भारत के बाहर हुए युद्धों को लड़ने में अंग्रेजों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए—

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2011

उत्तर—(b)

औपनिवेशिक शासनकाल में भारत सरकार के गृह शुल्कों (Home Charges) से तात्पर्य इंग्लैंड स्थित राज्य सचिव (Secretary of State) द्वारा भारत सरकार की ओर से किया गया व्यय था। इसमें शामिल थे—भारतीय सार्वजनिक ऋण एवं रेलों पर लगाई गई पूंजी पर दिया गया ब्याज, भारत को दी गई सैनिक और अन्य सामग्री की लागत, भारत के कारण इंग्लैंड में दिए जाने वाले नागरिक और सैनिक शुल्क, इंग्लैंड में राज्य सचिव का सारा व्यय (वर्ष 1919 तक) तथा भारत सरकार द्वारा यूरोपीय अफसरों को दिए जाने वाले भत्ते और पेंशन। भारत के बाहर हुए युद्धों को लड़ने में अंग्रेजों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली निधि गृह शुल्कों पर भारित नहीं थी। अतः विकल्प (b) अभीष्ट उत्तर होगा।

2. शब्द 'इंपीरियल प्रेफरेंस' का प्रयोग किया जाता था—

(a) भारत में ब्रिटिश आयातों पर दी गई विशेष रियायतों के लिए।

(b) ब्रिटिश नागरिकों द्वारा किए जा रहे प्रजातीय भेदभाव के लिए।

(c) ब्रिटिश हित के लिए किए जा रहे भारतीय हित के दमन के लिए।

(d) भारतीय रियासतों के राजाओं पर ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों को दी जा रही तरजीह के लिए।

I.A.S. (Pre) 1999

उत्तर—(a)

ब्रिटिश काल में 'इंपीरियल प्रेफरेंस' शब्दावली का प्रयोग भारत में ब्रिटिश आयातों पर दी गई विशेष रियायतों के लिए किया जाता था।

3. ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में उद्योगों का कोई स्वतंत्र विकास नहीं हुआ। इसका कारण था—

(a) भारी उद्योगों का अभाव

(b) विदेशी पूंजी की कमी

(c) प्राकृतिक संसाधनों की कमी

(d) धनिक वर्ग द्वारा भू-संपत्ति में निवेश करने को तरजीह दिया जाना

I.A.S. (Pre) 1999

उत्तर—(d)

Scanned with OKEN Scanner

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में धनिक वर्ग द्वारा भू-संपत्ति में निवेश करने को वरीयता दिए जाने के कारण उद्योगों का कोई स्वतंत्र विकास नहीं हो सका।

4. 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्यपदार्थ (स्टेपल कमोडिटीज़) क्या थे?

(a) अपरिष्कृत कपास, तिलहन और अफ़ीम
(b) चीनी, नमक, जस्ता और सीसा
(c) तांबा, चांदी, सोना, मसाले और चाय
(d) कपास, रेशम, शोरा और अफ़ीम

I.A.S. (Pre) 2018

उत्तर—(d)

प्रश्नानुसार 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्यपदार्थ (स्टेपल कमोडिटीज़) कपास, रेशम, शोरा एवं अफीम आदि थे। 18वीं शताब्दी में नील भी निर्यात की एक महत्वपूर्ण वस्तु थी। ध्यातव्य है कि इस काल में अफीम मुख्य रूप से चीन को निर्यात की जाती थी।

5. इस्तमरारी बंदोबस्त किसने लागू किया?

(a) वेलेजली (b) वॉरेन हेस्टिंग्स
(c) लॉर्ड कॉर्नवालिस (d) लॉर्ड डफरिन

U.P. P.C.S. (Pre) 1991

उत्तर—(c)

1793 ई. में लॉर्ड कॉर्नवालिस ने भू-राजस्व की स्थायी बंदोबस्त प्रणाली का प्रारंभ किया। इसे इस्तमरारी, जागीरदारी, मालगुजारी एवं बीसवेदारी आदि भिन्न-भिन्न नामों से भी जाना जाता है। यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश के वाराणसी तक के क्षेत्र में लागू थी। इसके अंतर्गत समूचे ब्रिटिश भारत के क्षेत्रफल का लगभग 19 प्रतिशत हिस्सा शामिल था। इस व्यवस्था के अंतर्गत जमींदारों के एक नए वर्ग को भू-स्वामी घोषित कर दिया गया, जिसे भूमि के लगान का 10/11 भाग कंपनी को देना था तथा 1/11 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था। स्थायी बंदोबस्त के अंतर्गत जमींदार छोटे पूंजीपति (भद्र नवाब) थे।

6. किसके प्रशासन काल में 'स्थायी बंदोबस्त' प्रारंभ किया गया था?

(a) वॉरेन हेस्टिंग्स (b) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(c) सर जॉन शोर (d) लॉर्ड वेलेजली

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2002
U.P.P.C.S. (Mains) 2005
U.P.P.C.S. (Pre) 2007
U.P. P.S.C. (GIC) 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. स्थायी बंदोबस्त किससे किया गया?

(a) जमींदारों से (b) किसानों से
(c) मजदूरों से (d) व्यापारियों से

M.P. P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'स्थायी बंदोबस्त' किसके साथ किया गया?

(a) जमींदारों के साथ (b) ग्रामीण समुदायों के साथ
(c) मुकदमों के साथ (d) किसानों के साथ

53rd to 55th B.P.S.C. (Pre) 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. किस गवर्नर-जनरल ने भारत में स्थायी भू-राजस्व व्यवस्था स्थापित की थी?

(a) लॉर्ड जॉन शोर (b) लॉर्ड क्लाइव
(c) लॉर्ड कॉर्नवालिस (d) लॉर्ड वॉरेन हेस्टिंग्स

M.P.P.C.S. (Pre) 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. लॉर्ड कॉर्नवालिस का स्थायी बंदोबस्त लागू किया गया—

(a) 1787 ई. में (b) 1789 ई. में
(c) 1790 ई. में (d) 1793 ई. में

U.P.P.C.S. (Mains) 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस की भू-व्यवस्था प्रणाली लागू होने के बाद कानूनी विवादों की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी देखी गई थी। निम्नलिखित प्रावधानों में से किस एक को सामान्यतया इसके कारक के रूप में जोड़ कर देखा जाता है?

(a) रैयत की तुलना में जमींदार की स्थिति को अधिक सशक्त बनाना।
(b) ईस्ट इंडिया कंपनी को जमींदारों का अधिपति बनाना।
(c) न्यायिक पद्धति को अधिक कार्यकुशल बनाना।
(d) उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

I.A.S. (Pre) 2011

उत्तर—(d)

Scanned with OKEN Scanner

1793 ई. में लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा प्रारंभ स्थायी बंदोबस्त (जमींदारी व्यवस्था) वाली भू-व्यवस्था प्रणाली में जमींदारों का भूमि पर वास्तविक अधिकार स्वीकृत कर लिया गया था (जब तक कि वे लगान एकत्र कर उसका 10/11 भाग सरकार को देते रहते)। लेकिन जमींदारी का भू-क्षेत्र निर्धारित नहीं था। लगान रहित अनुदान भूमि, चारागाह, परती आदि भूमि निर्धारित न होने के कारण कानूनी विवाद बढ़े। जमींदार एवं कृषक के बीच अनेक मध्यस्थों के कारण भी विधिक वादों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई। स्पष्ट है कि अभीष्ट विकल्प (d) होगा।

12. चिरस्थायी बंदोबस्त, 1793 के अंतर्गत जमींदारों से अपेक्षा की गई थी कि वे खेतिहरों को पट्टा जारी करेंगे। अनेक जमींदारों ने पट्टा जारी नहीं किए। इसका कारण था—

(a) जमींदारों के ऊपर किसानों का विश्वास था।
(b) जमींदारों के ऊपर कोई सरकारी नियंत्रण नहीं था।
(c) यह ब्रिटिश सरकार की जिम्मेदारी थी।
(d) खेतिहरों की दिलचस्पी पट्टा प्राप्त करने में नहीं थी।

I.A.S. (Pre) 2001

उत्तर—(b)

लॉर्ड कॉर्नवालिस ने 1793 ई. में स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था लागू की। इसके तहत जमींदार, जिन्हें भू-स्वामी के रूप में मान्यता प्राप्त थी, को अपने क्षेत्रों में भू-राजस्व की वसूली कर उसका 1/11वां हिस्सा अपने पास रखना होता था और शेष हिस्सा कंपनी के पास जमा करना होता था। जमींदार काश्तकारों से मनचाहा लगान वसूल करता था और समय से लगान न देने वाले काश्तकारों से जमीन भी वापस छीन ली जाती थी। कुल मिलाकर काश्तकार पूरी तरह जमींदारों की दया पर निर्भर होता था। जमींदारों के ऊपर कोई सरकारी नियंत्रण नहीं था तथा इस कारण बहुत से मामलों में पट्टे जारी नहीं किए जाते थे। इसी के फलस्वरूप 1859 ई. के रेंट अधिनियम (रेंट एक्ट) पारित होने के तीन दशक पहले कुछ जिलों में और बंगाल-बिहार सीमा के संथाल क्षेत्र के किसानों ने अपने परंपरागत अधिकारों की रक्षा के लिए हिंसा का सहारा लिया।

13. बिहार में 'परमानेंट सेटिलमेंट' लागू करने का कारण था—

(a) जमींदारों का जमीन पर अधिकार न रहना
(b) जमींदारों के लिए जमीन पर वंश परंपरागत अधिकार को स्वेच्छा से हस्तांतरित करने का अधिकार
(c) भू-राजस्व का राजस्व निर्णय करना
(d) जमींदारी-प्रथा का निर्मूलन

48th to 52nd B.P.S.C. (Pre) 2008

उत्तर—(c)

लॉर्ड कॉर्नवालिस के समय भू-राजस्व व्यवस्था आरंभ में दस वर्षीय व्यवस्था के रूप में 1790 ई. में लागू की गई थी, जो 22 मार्च, 1793 को 'परमानेंट सेटिलमेंट (स्थायी बंदोबस्त)' के रूप में स्थापित हुई। इस व्यवस्था को बिहार में लागू करने का मुख्य कारण कंपनी के लिए भू-राजस्व की एक निश्चित राशि तय करना था।

14. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

.... में बंगाल और बिहार में भूमि पर किरायेदारों के अधिकारों को बंगाल किरायेदारी अधिनियम द्वारा दिया गया था।

(a) 1885 (b) 1886
(c) 1889 (d) 1900

56th to 59th B.P.S.C. (Pre) 2015

उत्तर—(a)

1793 ई. में लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा स्थायी बंदोबस्त को लागू किया गया, जिसने जमींदारों को कई अधिकार प्रदान किए। 19वीं शताब्दी तक आते-आते भूमि की मांग बढ़ने लगी और भूमि मालिकों ने किराए में बढ़ोत्तरी की। यह समय किसानों के विद्रोह का था। इसी बीच बंगाल सरकार ने बंगाल एवं बिहार में बंगाल किरायेदारी अधिनियम, 1885 को लागू किया, जिसमें भूमि मालिकों (जमींदारों) और किरायेदारों के अधिकारों को परिभाषित किया गया।

15. निम्नलिखित में से कौन ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवाड़ी बंदोबस्त के प्रारंभ किए जाने से संबद्ध था/थे?

1. लॉर्ड कॉर्नवालिस 2. अलेक्जेंडर रीड
3. टॉमस मुनरो

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2017

उत्तर—(c)

रैयतवाड़ी बंदोबस्त अंग्रेजों द्वारा भारत में भू-राजस्व वसूली हेतु लागू की गई एक प्रणाली थी। अलेक्जेंडर रीड ने मद्रास प्रेसीडेंसी में सर्वप्रथम 1792 ई. में तमिलनाडु के बारामहल क्षेत्र में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की। टॉमस मुनरो ने 1809 ई. में कुछ क्षेत्रों में इसको लागू किया। 1820 ई. में मद्रास का गवर्नर बनने पर उसने इसे मद्रास में लागू किया। मुनरो के शिष्य एलफिंस्टन ने इसे बॉम्बे प्रेसीडेंसी में लागू किया। संपूर्ण ब्रिटिश भारत के 51 प्रतिशत क्षेत्र (मद्रास, बंबई के कुछ हिस्से, पूर्वी बंगाल, असम एवं कुर्ग) में यह व्यवस्था लागू की गई थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत रैयतों को भूमि का मालिकाना हक दिया गया, जिसके द्वारा वे प्रत्यक्ष रूप से सीधे या व्यक्तिगत रूप से भू-राजस्व अदा करने के लिए उत्तरदायी थे। 1836 ई. के बाद विनगेट और गोल्डस्मिथ द्वारा इस व्यवस्था में सुधार किए गए।

Scanned with OKEN Scanner

16. रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम कहां लागू की गई थी?
(a) गुजरात (b) मद्रास
(c) बंबई (d) उड़ीसा
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

67th B.P.S.C. (Pre) 2021

उत्तर–(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. भू-राजस्व की स्थायी बंदोबस्त एवं रैयतवाड़ी प्रणाली क्रमशः शुरू की गई-
(a) बंगाल तथा मद्रास में (b) मद्रास तथा पंजाब में
(c) मद्रास तथा बंगाल में (d) पंजाब तथा बंगाल में

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. सर टॉमस मुनरो भू-राजस्व बंदोबस्त से संबद्ध हैं–
(a) स्थायी बंदोबस्त (b) महालवाड़ी बंदोबस्त
(c) रैयतवाड़ी बंदोबस्त (b) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P. P.C.S. (Pre) 2000

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. ब्रिटिश व्यवस्था में रैयतवाड़ी भू-राजस्व संग्रह प्रचलित था-
(a) उत्तरी भारत में (b) पूर्वी भारत में
(c) पश्चिमी भारत में (d) दक्षिणी भारत में

U.P.P.S.C. (R.I.) 2014

उत्तर–(c&d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. मद्रास के रैयतवाड़ी बंदोबस्त से कौन संबंधित रहा था?
(a) मेलकॉम (b) मेटकॉफ
(c) मुनरो (d) एलफिंस्टन

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2008

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. रैयतवाड़ी प्रथा प्रारंभ की थी–
(a) टॉमस मुनरो (b) मार्टिन बर्ड
(c) कॉर्नवालिस (d) लॉर्ड डलहौजी

U.P. P.C.S. (Pre) 1992

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. अंग्रेजों ने रैयतवाड़ी बंदोबस्त कहां लागू किया था?
(a) बंगाल प्रेसीडेंसी
(b) मद्रास प्रेसीडेंसी
(c) बंबई प्रेसीडेंसी
(d) मद्रास और बंबई प्रेसीडेंसी

I.A.S. (Pre) 1993
U.P. U.D.A./L.D.A. (Pre) 2001
Jharkhand P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. अंग्रेजों ने रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम आरंभ की थी-
(a) बंगाल प्रेसीडेंसी में (b) आगरा में
(c) बंबई प्रेसीडेंसी में (d) मद्रास प्रेसीडेंसी में

U.P.P.C.S. (Mains) 2016

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. रैयतवाड़ी बंदोबस्त के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. किसानों द्वारा लगान सीधे सरकार को दिया जाता था।
2. सरकार रैयत को पट्टे देती थी।
3. कर लगाने के पूर्व भूमि का सर्वेक्षण और मूल्य-निर्धारण किया जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3 (d) कोई भी नहीं

I.A.S. (Pre) 2012

उत्तर–(c)

दक्षिण भारत में उत्तर भारत की तरह बड़े-बड़े भूखंडों एवं बड़े जमींदारों के अभाव में रैयतवाड़ी व्यवस्था को लागू किया गया। इस व्यवस्था का सूत्रपात कैप्टन रीड और टॉमस मुनरो ने किया था। रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत किसानों को अपनी जमीन का मालिक माना जाता था, जो सीधे सरकार को कर देते थे। कर का निर्धारण भूमि का सर्वेक्षण करने के बाद किया जाता था। भूमि सर्वेक्षण के बाद लगान के लिए किसान और सरकार के बीच एक समझौता होता था। किसान की सहमति के बाद उसे पट्टा दिया जाता था, जो भूमि पर उसकी निजी संपत्ति का प्रमाण होता था।

Scanned with OKEN Scanner

25. वह प्रथा, जिसके तहत किसान स्वयं भूमि का मालिक होता है और सरकार को भू-राजस्व के भुगतान के लिए जिम्मेदार माना जाता है?

(a) जमींदारी प्रथा (b) रैयतवाड़ी प्रथा

(c) महालवाड़ी प्रथा (d) दहसाला प्रथा

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/ उपर्युक्त में से एक से अधिक

65th B.P.S.C. (Pre) 2019

उत्तर–(b)

रैयतवाड़ी प्रथा के अंतर्गत किसान स्वयं भूमि का मालिक होता है और सरकार को भू-राजस्व के भुगतान के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है -

कथन (A) : ब्रिटिश सरकार ने भारत के अलग-अलग भागों में भू-राजस्व की अलग-अलग व्यवस्था लागू की थी।

कारण (R) : इससे भारतीय किसानों में अलग-अलग वर्ग बन गए।

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(c) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।

(d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

U.P. P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर–(a)

ब्रिटिश सरकार ने भारत के अलग-अलग भागों में भू-राजस्व की अलग-अलग व्यवस्था लागू की थी। ये व्यवस्थाएं थीं - स्थायी बंदोबस्त प्रणाली, रैयतवाड़ी व्यवस्था तथा महालवाड़ी पद्धति। स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश के वाराणसी तक के क्षेत्र में लागू थी। इसके अंतर्गत समूचे ब्रिटिश भारत के क्षेत्र का लगभग 19 प्रतिशत हिस्सा शामिल था। रैयतवाड़ी व्यवस्था (लगभग 51 प्रतिशत हिस्सा) मद्रास, बंबई के कुछ हिस्से, पूर्वी बंगाल, असम तथा कुर्ग (आधुनिक कर्नाटक का एक भाग) में लागू थी। महालवाड़ी पद्धति (लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा) संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत तथा पंजाब (कुछ परिवर्तनों के साथ) में लागू की गई थी। अतः स्पष्ट है कि इससे भारतीय किसानों में अलग-अलग वर्ग बन गए थे। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

27. पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम कब पारित किया गया?

(a) 1850 (b) 1895

(c) 1900 (d) 1905

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/उपर्युक्त में से एक से अधिक

63rd B.P.S.C. (Pre) 2017

उत्तर–(c)

पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम, 1900 ई. में पारित किया गया, जिससे कृषकों की भूमि का गैर-कृषकों के पास हस्तांतरित होना समाप्त हो गया।

28. असम में सर्वप्रथम चाय कंपनी की स्थापना कब हुई थी?

(a) 1835 में (b) 1837 में

(c) 1839 में (d) 1841 में

U.P.R.O/A.R.O. (Pre) 2016

उत्तर–(c)

असम में सर्वप्रथम चाय कंपनी की स्थापना 1839 ई. में हुई थी। यह कंपनी 5 लाख रु. की पूंजी के साथ इंग्लैंड में स्थापित की गई थी तथा नजीरा, असम में इस कंपनी का मुख्यालय था। 'द असम कंपनी' भारत की सबसे पुरानी व्यावसायिक चाय कंपनी है, जो वर्तमान में भी कार्यरत है।

29. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए -

सूची - I	सूची - II
A. जजमानी	1. उत्तर भारत
B. बारा बलूट	2. कर्नाटक
C. मिरासि	3. महाराष्ट्र
D. अडाडे	4. तमिलनाडु

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	1	3	2	4
(c)	1	4	2	3
(d)	1	3	4	2

U.P. P.C.S. (Pre) 2020

उत्तर–(d)

सूची - I और सूची - II का सही सुमेलन है-

सूची - I	सूची - II
जजमानी	उत्तर भारत
बारा बलूट	महाराष्ट्र
मिरासि	तमिलनाडु
अडाडे	कर्नाटक

UPPSC द्वारा जारी उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) दिया गया है, जो कि गलत है।

Scanned with OKEN Scanner

30. ब्रिटिश भारत में सैन्य बल पर केंद्रीय राजस्व का कुल कितना प्रतिशत व्यय होता था?

(a) 40% (b) 45%

(c) 50% (d) 55%

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2021

उत्तर–(a)

यद्यपि की इस तरह के प्रश्न का उत्तर विवादित होता है, तथापि कई स्रोत ब्रिटिश भारत में औसतन सैन्य बल पर खर्च को केंद्रीय राजस्व का लगभग 40 प्रतिशत मानते हैं।

31. दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'अपवाह सिद्धांत' (Drain Theory) की सही परिभाषा नीचे के किस कथन में आती है?

(a) देश के संसाधनों का उपयोग ब्रिटेन के हित में किया जा रहा था।

(b) भारत की राष्ट्रीय संपदा का एक भाग अथवा कुल वार्षिक उत्पाद ब्रिटेन को निर्यात कर दिया जाता था, जिसके लिए भारत को कोई वास्तविक प्रतिफल नहीं मिलता था।

(c) साम्राज्यवादी शक्ति के संरक्षण में ब्रिटिश उद्योगपतियों को भारत में निवेश के अवसर दिए जाते थे।

(d) भारत में ब्रिटिश सामान का आयात किया जाता था और यों देश को दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक गरीब बनाया जाता था।

I.A.S. (Pre) 1993

उत्तर–(b)

धन के बहिर्गमन या अपवाह (Drain) की राष्ट्रवादी परिभाषा का तात्पर्य भारत से धन-संपत्ति एवं माल का इंग्लैंड में हस्तांतरण था, जिसके बदले में भारत को इसके समतुल्य कोई भी आर्थिक, वाणिज्यिक या भौतिक प्रतिलाभ नहीं होता था। 'अपवाह सिद्धांत' के तहत इसी अप्रतिफलित निर्यात पर बल दिया गया। दादाभाई नौरोजी धन के बहिर्गमन के सिद्धांत के सबसे पहले और सर्वाधिक प्रखर प्रतिपादक थे। उन्होंने अपने लेखों एवं पुस्तकों– 'इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया', 'पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया', 'द वॉन्ट्स एंड मीन्स ऑफ इंडिया' तथा 'ऑन द कॉमर्स ऑफ इंडिया' के माध्यम से अपने अपवाह सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

32. निम्न में से किसने 'निकास के सिद्धांत' का प्रतिपादन किया था?

(a) दादाभाई नौरोजी (b) गोपाल कृष्ण गोखले

(c) लोकमान्य तिलक (d) मदन मोहन मालवीय

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. अंग्रेजों के शासनकाल में भारत के 'आर्थिक दोहन' के सिद्धांत को किसने प्रतिपादित किया?

(a) एम.एन. राय (b) जयप्रकाश नारायण

(c) राममनोहर लोहिया (d) दादाभाई नौरोजी

U.P. P.C.S. (Pre) 1995

U.P. P.C.S. (Main) 2004

उत्तर–(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा उनके नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

अभिकथन (A) : ब्रिटिश काल में सामान्यतः भारत का व्यापार संतुलन अनुकूल था।

कथन (R) : धन की निकासी का स्वरूप अप्रतिफलित निर्यात था।

कूट :

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सही है, पर (R) गलत है।

(d) (A) गलत है, पर (R) सही है।

U.P. P.C.S. (Pre.) 2017

उत्तर–(a)

बहिर्गमन अथवा निकासी की राष्ट्रवादी परिभाषा का तात्पर्य भारत से धन-संपत्ति एवं माल का इंग्लैंड में हस्तांतरण था, जिसके बदले में भारत को इसके समतुल्य कोई भी आर्थिक, वाणिज्यिक या प्रतिलाभ नहीं होता था। ब्रिटिश काल में सामान्यतः भारत का व्यापार संतुलन अनुकूल था, क्योंकि इस दौरान आयात की तुलना में अधिक निर्यात होता था। ईस्ट इंडिया कंपनी के धन निष्कासन के स्रोत थे- व्यापारिक एकाधिकार से प्राप्त लाभ, कंपनी के कर्मचारियों के वेतन एवं पेंशन, कंपनी के निवेशकों को दिया जाने वाला लाभांश आदि। कंपनी द्वारा जो पैसा इंग्लैंड भेजा जाता था वही पैसा पुनः भारत में विदेशी ऋण तथा पूंजी निवेश के रूप में प्राप्त होता था। परंतु इस पूंजी निवेश का उद्देश्य देश का विकास नहीं बल्कि भारतीय साधनों का अधिकाधिक शोषण था। 1813 ई. के पश्चात इस आर्थिक निकास ने 'अप्रतिफल' निर्यात का रूप धारण कर लिया। वर्ष 1914 के पहले भारत में अंग्रेजी पूंजी निवेश केवल उन आर्थिक उपरिसाधनों में लगाए गए जैसे- रेलवे, सड़क, व्यापारिक जहाज तथा खनिज उद्योग (कोयला एवं सोना) एवं वित्तीय संस्थाओं (बैंक, बीमा एवं वित्तीय निगम) में जो अंग्रेजी उद्योग के अनुपूरक थे और इनमें भारतीय औद्योगिक विकास के लिए कोई स्थान नहीं था। दादाभाई नौरोजी ने धन के निकास को 'अनिष्टों का अनिष्ट' (evil of all evils) की संज्ञा दी और इसे भारत की निर्धनता का मुख्य कारण बताया। अतः स्पष्ट है कि (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

Scanned with OKEN Scanner

35. निम्नलिखित में से कौन भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे?

1. दादाभाई नौरोजी
2. जी. सुब्रमण्य अय्यर
3. आर.सी. दत्त

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2015

उत्तर–(d)

1870 से 1905 ई. के बीच बहुत से भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश शासन के आर्थिक पहलू को विश्लेषित किया। इनमें तीन लोगों का योगदान सबसे महत्वपूर्ण रहा, वे थे–1. दादाभाई नौरोजी, 2. महादेव गोविंद रानाडे और 3. आई.सी.एस. अधिकारी रमेश चंद्र दत्त। इन्होंने भारत का आर्थिक इतिहास लिखा। इन तीनों के अतिरिक्त जी.वी. जोशी, जी. सुब्रमण्य अय्यर ('द हिंदू' समाचार-पत्र के संस्थापक-संपादक), गोपाल कृष्ण गोखले समेत अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं और पत्रकारों ने तत्कालीन अर्थव्यवस्था के हर पहलू का गहराई से विश्लेषण किया। ये लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भारत के आर्थिक विकास के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा उपनिवेशवाद ही है।

36. निम्नलिखित में से कौन दादाभाई नौरोजी के उत्सारण सिद्धांत (Drain Theory) में विश्वास नहीं करता था?

(a) बाल गंगाधर तिलक (b) आर.सी. दत्त
(c) एम.जी. रानाडे (d) सर सैयद अहमद खां

I.A.S. (Pre) 1996

उत्तर–(d)

सर सैयद अहमद खां ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार थे और मुस्लिम समाज का विकास वे भारत में आंग्ल सत्ता के बने रहने में ही संभव मानते थे। अतः वे दादाभाई नौरोजी के उत्सारण सिद्धांत में विश्वास नहीं करते थे।

37. 'पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' नामक पुस्तक किस वर्ष प्रकाशित हुई?

(a) 1900 ई. (b) 1901 ई.
(c) 1902 ई. (d) 1903 ई.

U.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर–(b)

'पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' के लेखक दादाभाई नौरोजी हैं। यह पुस्तक वर्ष 1901 में लंदन के एस. सोनेश्वेन प्रकाशक द्वारा प्रकाशित की गई थी।

38. 'पावर्टी एंड द अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' नामक पुस्तक किसने लिखी?

(a) अमर्त्य कुमार सेन (b) रमेश चंद्र दत्त
(c) गोपाल कृष्ण गोखले (d) दादाभाई नौरोजी

U.P. P.C.S. (Mains) 2004

उत्तर–(d)

दादाभाई नौरोजी (1825-1917 ई.) ने 1865 ई. में डब्ल्यू. सी. बनर्जी के साथ मिलकर लंदन इंडिया सोसायटी का गठन किया, जिसका कार्य भारत के दुःख दर्दों का प्रचार करना था। 1892 ई. में लिबरल पार्टी के टिकट पर ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमंस के लिए चुने जाने वाले वे पहले भारतीय थे। दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में स्पष्ट रूप से ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की आर्थिक दुरावस्था पर प्रकाश डाला तथा धन के बहिर्गमन अथवा धन के निकास सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादन किया।

39. ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स में चुने जाने वाले दादाभाई नौरोजी प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने इस दल के टिकट पर चुनाव लड़ा -

(a) उदारवादी दल (b) मजदूर दल
(c) कंजर्वेटिव दल (d) साम्यवादी दल
(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं/ उपर्युक्त में से एक से अधिक

B.P.C.S. (Pre.) 2016

उत्तर–(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. ब्रिटिश शासन के समय अर्थव्यवस्था को खोखला करने (इकोनॉमिक ड्रेन) के सिद्धांत के बारे में पुस्तक किसने लिखी थी?

(a) लाला लाजपत राय (b) महात्मा गांधी
(c) पं. जवाहरलाल नेहरू (d) दादाभाई नौरोजी

U.P. P.C.S. (Mains) 2007

उत्तर–(d)

ब्रिटिश शासन के समय अर्थव्यवस्था को खोखला करने के सिद्धांत (Economic drain theory) पर दादाभाई नौरोजी ने पुस्तक लिखी।

41. 'अनुद्योगीकरण' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. यह प्रक्रिया 1813 में प्रारंभ हुई।
2. ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकारों की समाप्ति ने इस प्रक्रिया को तेज किया।

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–

कूट :

(a) केवल 1 (b) केवल 2

Scanned with OKEN Scanner

(c) 1 तथा 2 दोनों (d) न 1, न 2

U.P. P.C.S. (Mains) 2017

उत्तर—(c)

भारत में अनुद्योगीकरण की प्रक्रिया 1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा कंपनी का भारतीय व्यापार का एकाधिकार समाप्त करने से शुरू हुई। इससे ब्रिटेन की समस्त प्रजा को पूर्वी विश्व के साथ व्यापार की अनुमति प्राप्त हो गई। यह औद्योगिक क्रांति को विस्तार देने के लिए किया गया था। इससे भारत ब्रिटिश उत्पादों का बाजार बन गया।

42. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—

दादाभाई नौरोजी की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को सर्वाधिक प्रभावी देन थी कि-

1. उन्होंने इस बात को अभिव्यक्त किया कि ब्रिटेन, भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है।

2. उन्होंने प्राचीन भारतीय ग्रंथों की व्याख्या की और भारतीयों में आत्म-विश्वास जगाया।

3. उन्होंने सभी सामाजिक बुराइयों के निराकरण की आवश्यकता पर सर्वोपरि जोर दिया।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2012

उत्तर—(a)

दादाभाई नौरोजी आधुनिक भारत के प्रथम ऐसे राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने गहरे शोध और विश्लेषण के बल पर यह सिद्ध किया कि ब्रिटेन भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है और प्रतिवर्ष एक निश्चित रकम इंग्लैंड ले जाई जा रही है। इसके परिप्रेक्ष्य में ही उन्होंने अपनी इकोनॉमिक 'ड्रेन' थ्योरी दी।

43. किसने यह विचार किया था कि भारत में 'ब्रिटिश आर्थिक नीति' घिनौनी है?

(a) बी.जी. तिलक (b) दादाभाई नौरोजी

(c) कार्ल मार्क्स (d) एडम स्मिथ

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007

उत्तर—(c)

कार्ल मार्क्स ने यह विचार व्यक्त किया था कि 'ब्रिटिश आर्थिक नीति' घिनौनी है। अंग्रेजी हस्तक्षेप से सूत कातने वाला तो लंकाशायर में रहता है। तंतुवाय बंगाल और उसका आर्थिक आधार समाप्त होने के कारण लगभग लुप्त हो गया है। लाखों चरखों और हथकरघों ने असंख्य कातने वालों बुनकरों को जन्म दिया तथा वे समाज के केंद्र बिंदु बने रहे थे। किंतु अब इस देश में (विदेशी) सूती कपड़े की मानो बाढ़ आ गई है।

44. दक्षिण भारत में सिंचाई व्यवस्था का अग्रदूत किसे माना जाता है?

(a) सर आर्थर कॉटन

(b) कर्नल बेयर्ड स्मिथ

(c) लेफ्टिनेंट ब्लेन

(d) कर्नल रॉबर्ट स्मिथ

Uttarakhand P.C.S. (Pre.) 2016

उत्तर—(a)

सर आर्थर कॉटन ब्रिटिश सिंचाई अभियंता थे। उन्होंने दक्षिण भारतीय राज्यों की सिंचाई व्यवस्था हेतु उल्लेखनीय कार्य किया। इसलिए सर आर्थर काटॅन को 'दक्षिण भारत में सिंचाई व्यवस्था का अग्रदूत' माना जाता है।

45. भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए—

1. औरंग	**—**	**राजकोष का प्रभारी**
2. बेनियान	**—**	**ईस्ट इंडिया कंपनी का भारतीय एजेंट**
3. मिरासिदार	**—**	**राज्य का नामित राजस्व दाता**

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

I.A.S. (Pre) 2020

उत्तर—(b)

औरंग फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ 'गोदाम' होता है। यहां पर बिक्री से पहले माल का भंडारण किया जाता था। ध्यातव्य है कि 'औरंग' शब्द का प्रयोग कई बार कार्यशालाओं (Work Shops) के लिए भी किया जाता है। बेनियान (बनियां) पारंपरिक वणिक समुदाय के व्यापारी थे, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट के रूप में कंपनी एवं भारतीय कारीगरों के बीच मध्यस्थ का काम करते थे। मिरासी अरबी शब्द है, जिसका अर्थ उत्तराधिकार होता है। रैयतवाड़ी प्रणाली में सरकार द्वारा मिरासिदारों को राज्य का इकलौता नामित राजस्व दाता माना गया। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

46. आर्थिक तौर पर, 19वीं शताब्दी में भारत पर अंग्रेजी शासन का एक परिणाम था-

(a) भारतीय हस्त-शिल्पों के निर्यात में वृद्धि

(b) भारतीयों के स्वामित्व वाले कारखानों की संख्या में वृद्धि

(c) भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण

(d) नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

I.A.S. (Pre) 2018

उत्तर—(c)

Scanned with OKEN Scanner

1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त करके मुक्त व्यापार नीति अपनाई गई। इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति उफान पर थी, अत: इंग्लैंड को अपने उद्योगों के लिए सस्ते माल की आवश्यकता थी। इस प्रकार भारत कच्चे माल का उत्पादन करने वाला देश बनकर रह गया। इसके अतिरिक्त भारत में पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ने के साथ-साथ नई लगान नीति के कारण किसान को अब नकद राशि की आवश्यकता थी। इसलिए किसान भी उन फसलों को उगाने के लिए विवश हुए जिनका बाजार में क्रय-विक्रय हो सके। जबकि इससे पूर्व किसान केवल उन्हीं फसलों को उगाता था, जिनकी खपत स्थानीय स्तर पर होती थी। चाय, रबर, कॉफी, नील, रेशम, जूट और तंबाकू जैसी वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन की शुरुआत हो गई, जो ब्रिटिश पूंजीवाद की पहली पसंद थी। इन फसलों के लिए उन्हें यूरोपीय बाजारों में अत्यधिक कीमत प्राप्त होती थी। इस प्रकार उत्पादन के स्वरूप और प्रकृति में मूलभूत परिवर्तन हुए और भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण हो गया।

47. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन औद्योगिक क्रांति के द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भारत पर पड़े प्रभाव की सही व्याख्या करता है?

(a) भारतीय दस्तकारी-उद्योग नष्ट हो गए थे।

(b) भारत के वस्त्र-उद्योग में मशीनों का बड़ी संख्या में प्रवेश हुआ था।

(c) देश के अनेक भागों में रेलवे लाइनें बिछाई गई थीं।

(d) ब्रिटिश उत्पादन के आयात पर भारी शुल्क लगाया गया था।

I.A.S. (Pre) 2020

उत्तर–(a)

19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप भारतीय कुटीर उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा। इस युग को भारत में अनौद्योगीकरण का काल कहते हैं। इसके लिए अग्रलिखित नीतियां उत्तरदायी थीं– 1. भारत पर मुक्त व्यापार नीति को लागू करना, 2. भारतीय माल पर अत्यधिक चुंगी (कर) लगाना, 3. ब्रिटिश कंपनी द्वारा भारत से कच्चे माल का निर्यात , 4. रेल मार्गों का विकास 5. विदेशी निर्माताओं को उद्योग लगाने के लिए विशेष सुविधाएं देना इत्यादि। इन सभी कारणों ने मिलकर भारतीय परंपरागत दस्तकारी-उद्योग का विनाश कर दिया। इस संबंध में कार्ल मार्क्स ने लिखा है कि, ''यह अंग्रेज घुसपैठिया था, जिसने भारतीय खड्डी को तोड़ दिया, चरखे का नाश कर दिया तथा जो देश सूती वस्त्रों के लिए जाना जाता था, उसे सूती वस्त्रों से भर दिया।''